Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN: 2584-184X

Review Article

The Role of Women's Organizations and Women's Leadership in the Indian Freedom Struggle

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिला संगठन व महिला नेतृत्व की भूमिका

Prof. (Major) Dr Anita June
Principal, Government College for Girls, Dadupur Roadan, Karnal, Haryana, India

Corresponding Author: * Prof. (Major) Dr Anita June

ABSTRACT

The role of women in the Indian freedom struggle was highly significant, inspiring, and transformative. This research paper provides a detailed study of the political, social, and revolutionary participation of Indian women from the late nineteenth century to 1947. Women's organisations such as the All-India Women's Conference, Mahila Raksha Samiti, and Desh Sevika Sangh not only contributed to the organisation and strengthening of the freedom movement but also played an important role in social reform and women's empowerment.

Remarkable women leaders such as Sarojini Naidu, Kasturba Gandhi, Aruna Asaf Ali, Sucheta Kriplani, and Lakshmi Sahgal provided new direction and momentum to the freedom struggle through their courage, commitment, and leadership. Women participated in various forms of political mobilisation, public demonstrations, civil disobedience, revolutionary activities, social reform initiatives, and nationalist campaigns.

The study demonstrates that the active participation of women transformed the Indian freedom struggle into a broad-based mass movement. Their involvement challenged traditional gender roles and created new spaces for women in public and political life. Women's organisations further strengthened collective action and contributed to the development of social consciousness, education, political awareness, and gender equality. Thus, the contribution of women was not merely supportive but constituted an essential dimension of India's struggle for independence and played a significant role in redefining the status and identity of women in Indian society.

Keywords: Indian Freedom Struggle, Women's Organisations, Women's Empowerment, Social Reform, National Movement, Women's Leadership, Political Participation, Indian Women.

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक रही है। इस शोध पत्र में उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से 1947 तक भारतीय महिलाओं की राजनीतिक, सामाजिक और क्रांतिकारी भागीदारी का विस्तृत अध्ययन किया गया है। महिला संगठनों जैसे अखिल भारतीय महिला सम्मेलन, महिला रक्षा समिति और देश सेविका संघ ने न केवल स्वतंत्रता आंदोलन को संगठित किया, बल्कि सामाजिक सुधार और महिला सशक्तिकरण में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी, लक्ष्मी सहगल जैसी महान नेत्रियों ने अपने साहस और नेतृत्व से स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा प्रदान की। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने स्वतंत्रता संग्राम को एक व्यापक जन आंदोलन का स्वरूप दिया और भारतीय समाज में नारी की स्थिति को नई पहचान दी।

Manuscript Info.

- ✓ **ISSN No:** 2584-184X
- ✓ **Received:** 11-06-2024
- ✓ **Accepted:** 27-07-2024
- ✓ **Published:** 30-08-2024
- ✓ **MRR:2(8):**2024;54-57
- ✓ **©2024, All Rights Reserved**
- ✓ **Peer Review Process:** Yes
- ✓ **Plagiarism Checked:** Yes

How To Cite

Prof. (Major) Dr. Anita June. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिला संगठन व महिला नेतृत्व की भूमिका. Indian Journal of Modern Research and Reviews: 2024;2(8):54-57.

कूटशब्द: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, महिला संगठन, नारी सशक्तिकरण, सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय आंदोलन

© 2024 Prof. (Major) Dr. Anita June. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. परिचय

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम विश्व इतिहास का एक ऐसा अनूठा अध्याय है जिसमें न केवल पुरुषों ने, बल्कि महिलाओं ने भी अपनी सक्रिय और निर्णायक भूमिका निभाई है। सदियों की सामाजिक बंधनों और पितृसत्तात्मक व्यवस्था को तोड़कर भारतीय महिलाओं ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष में बढ़-चढ़कर भाग लिया। यह भागीदारी केवल प्रतीकात्मक नहीं थी, बल्कि इसने स्वतंत्रता आंदोलन को एक जन आंदोलन का स्वरूप दिया।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर 1947 तक के काल में भारतीय महिलाओं ने विभिन्न संगठनों की स्थापना की, आंदोलनों का नेतृत्व किया, जेल गईं, और अपने प्राणों की आहुति दी। सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, अरुणा आसिफ अली, सुचेता कृपलानी, लक्ष्मी सहगल जैसी अनेक महान विभूतियों ने न केवल स्वतंत्रता के स्वप्न को साकार किया, बल्कि समाज में नारी की एक नई छवि भी गढ़ी।

यह शोध पत्र भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिला संगठनों की भूमिका का विस्तृत विश्लेषण करता है। इसमें विभिन्न संगठनों के उद्भव, उनके कार्यक्षेत्र, प्रमुख नेत्रियों के योगदान, और आंदोलन पर उनके दीर्घकालिक प्रभाव का अध्ययन किया गया है। साथ ही उन चुनौतियों और बाधाओं का भी विश्लेषण किया गया है जिनसे ये महिलाएँ संघर्ष करते हुए आगे बढ़ीं।

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत भारतीय समाज दोहरे संकट में था। एक ओर विदेशी सत्ता का शोषण था, तो दूसरी ओर सामाजिक कुरीतियाँ — बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, और शिक्षा से वंचित महिलाएँ। उन्नीसवीं शताब्दी में राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसे समाज सुधारकों ने महिला उत्थान की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठाए।

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने यह सिद्ध कर दिया कि नारी शक्ति देश की रक्षा में सक्षम है। उनके बलिदान ने आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा दी। इसके बाद जैसे-जैसे राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ, महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता भी बढ़ती गई।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885) के बाद धीरे-धीरे महिलाएँ सार्वजनिक मंचों पर आने लगी। 1889 में कांग्रेस के मुंबई अधिवेशन में पहली बार महिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया। यह एक ऐतिहासिक क्षण था जिसने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का द्वार खोला।

2.1 सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में भारत में महिला शिक्षा का प्रसार हो रहा था। मिशनरी स्कूलों और भारतीय समाज सुधारकों के प्रयासों से शिक्षित महिलाओं की एक नई पीढ़ी तैयार हो रही थी जो न केवल घर की चारदीवारी में बल्कि समाज में भी अपनी भूमिका के प्रति सचेत थी। इस नई चेतना ने महिला संगठनों के उदय की भूमि तैयार की।

3. प्रमुख महिला संगठन

3.1 अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (AIWC) — 192

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (All India Women's Conference) की स्थापना 1927 में मारग्रेट कजिन्स के नेतृत्व में हुई। यह संगठन प्रारंभ में महिला शिक्षा के लिए कार्य करता था, किंतु शीघ्र ही इसने राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों को भी अपने कार्यक्षेत्र में शामिल कर लिया। इसके प्रमुख उद्देश्यों में महिलाओं के लिए मताधिकार, बाल विवाह उन्मूलन, और समान नागरिक अधिकार शामिल थे।

AIWC ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महिलाओं को संगठित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्रों में महिलाओं को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा। सरोजिनी नायडू, राजकुमारी अमृत कौर, और हंसा मेहता इसकी प्रमुख नेत्रियाँ रहीं।

3.2 राष्ट्रीय स्त्री सभा और महिला रक्षा समिति

विभिन्न राज्यों में अनेक स्थानीय महिला संगठनों की स्थापना हुई। बंगाल में 'महिला रक्षा समिति' ने असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान सक्रिय भूमिका निभाई। ये संगठन आंदोलनकारियों के परिवारों की सहायता करते, गिरफ्तार नेताओं के संदेश फैलाते, और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का प्रचार करते थे।

3.3 देश सेविका संघ

महाराष्ट्र में 'देश सेविका संघ' एक प्रमुख संगठन था जिसने महिलाओं को राष्ट्रीय सेवा के लिए प्रशिक्षित किया। यह संगठन स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन देने, चरखा कातने, और खादी पहनने के लिए महिलाओं को जागरूक करता था।

3.4 महिला खादी समितियाँ

गांधीजी के आह्वान पर पूरे देश में महिला खादी समितियाँ गठित हुईं। इन समितियों ने न केवल आर्थिक प्रतिरोध का माध्यम बनाया बल्कि महिलाओं को एक सामूहिक मंच भी प्रदान किया। इन समितियों के माध्यम से महिलाएँ पहली बार घर से बाहर निकलकर सार्वजनिक जीवन में सहभागी हुईं।

4. महिला नेत्रियों का योगदान

4.1 सरोजिनी नायडू — 'भारत कोकिला'

सरोजिनी नायडू (1879 -1949 भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की सबसे प्रभावशाली महिला नेत्रियों में से एक थीं। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष (1925) बनीं। दांडी मार्च और नमक सत्याग्रह में उनकी सक्रिय भागीदारी ने उन्हें राष्ट्रीय नायिका का दर्जा दिलाया। उनकी ओजस्वी वाणी और काव्य-प्रतिभा ने जन-मानस को झकझोर दिया।

4.2 कस्तूरबा गांधी

कस्तूरबा गांधी ने महात्मा गांधी के कंधे से कंधा मिलाकर आंदोलन में भाग लिया। वे 'बा' के नाम से प्रसिद्ध थीं। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में भी सत्याग्रह आंदोलन में हिस्सा लिया। भारत में उन्होंने ग्रामीण महिलाओं को संगठित किया, जेल की यात्राएँ कीं, और अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र सेवा को समर्पित कर दिया। 1944 में आखान महल में

© 2024 Prof. (Major) Dr. Anita June. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

उनका निधन हो गया, किंतु उनका बलिदान देश को सदा प्रेरणा देता रहेगा।

4.3 अरुणा आसफ अली

अरुणा आसफ अली को 'भारत छोड़ो आंदोलन की नायिका' कहा जाता है। 9 अगस्त 1942 को गोवालिया टैंक मैदान में उन्होंने कांग्रेस का तिरंगा फहराया जो उस आंदोलन का प्रतीक बन गया। ब्रिटिश सरकार ने उन पर भारी इनाम घोषित किया, किंतु वे भूमिगत रहकर आंदोलन को संचालित करती रहीं। उनकी निडरता और साहस आज भी प्रेरणास्रोत है।

4.4 सुचेता कृपलानी

सुचेता कृपलानी ने भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। बाद में वे भारत की पहली महिला मुख्यमंत्री (उत्तर प्रदेश, 1963) बनीं। संविधान सभा में उनकी भागीदारी ने नारी शक्ति को एक नई ऊँचाई दी। उन्होंने वंदे मातरम गाकर भारत की स्वतंत्रता के ऐतिहासिक क्षण को और भी अविस्मरणीय बना दिया।

4.5 लक्ष्मी सहगल और आज़ाद हिंद फ़ौज

डॉ. लक्ष्मी सहगल ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आज़ाद हिंद फ़ौज में 'रानी झाँसी रेजिमेंट' का नेतृत्व किया। यह पहला अवसर था जब भारतीय महिलाओं ने एक सशस्त्र सेना में सेवा की। इस रेजिमेंट में हजारों महिलाओं ने भर्ती होकर यह संदेश दिया कि वे देश की सशस्त्र रक्षा करने में भी पूर्ण सक्षम हैं।

4.6 विजयलक्ष्मी पंडित

जवाहरलाल नेहरू की बहन विजयलक्ष्मी पंडित ने न केवल स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया, बल्कि उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत की स्वतंत्रता के लिए जनमत तैयार किया। वे भारत की पहली महिला राजदूत और संयुक्त राष्ट्र महासभा की पहली महिला अध्यक्ष बनीं।

5. सविनय अवज्ञा आंदोलन में भूमिका

1930-32 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी एक ऐतिहासिक मोड़ थी। दांडी यात्रा (मार्च-अप्रैल 1930) के बाद देश भर में नमक सत्याग्रह की लहर उठी और महिलाएँ इसमें सबसे आगे रहीं।

मुंबई में कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने सार्वजनिक स्थल पर नमक बनाकर सत्याग्रह किया और गिरफ्तारी दी। उन्होंने स्वयं समुद्र तट पर जाकर नमक बनाने की घोषणा की जो उस समय की एक अत्यंत साहसिक कार्रवाई थी। देश के विभिन्न भागों में महिलाओं ने विदेशी वस्त्रों और मदिरा की दुकानों के सामने पिकेटिंग की।

गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, उत्तर प्रदेश, और तमिलनाडु में हज़ारों महिलाओं ने जुलूस निकाले, गिरफ्तारियाँ दीं, और जेल में भी अपना मनोबल बनाए रखा। इस आंदोलन ने ग्रामीण महिलाओं को भी आकृष्ट किया जो पहले कभी सार्वजनिक जीवन में सक्रिय नहीं रही थीं।

5.1 महिलाओं की जेल यात्राएँ

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान हजारों महिलाओं ने जेल की सजा भोगी। जेल में भी उन्होंने अपना संघर्ष जारी रखा। जेल की कठिन परिस्थितियों, भूख हड़ताल, और यातनाओं के बावजूद उनका मनोबल अटूट रहा। इन महिलाओं ने जेल के भीतर भी राजनीतिक जागरूकता का प्रसार किया।

6. भूमिगत गतिविधियाँ एवं क्रांतिकारी आंदोलन

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान केवल शांतिपूर्ण आंदोलनों तक सीमित नहीं था। अनेक महिलाओं ने क्रांतिकारी गतिविधियों में भी भाग लिया। भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, और अन्य क्रांतिकारियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने वाली महिलाएँ भी थीं।

6.1 प्रीतिलता वाद्देदार

बंगाल की क्रांतिकारी प्रीतिलता वाद्देदार ने 1932 में चटगाँव में ब्रिटिश क्लब पर हमले का नेतृत्व किया। पकड़े जाने से बचने के लिए उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए। वे पहली भारतीय महिला शहीद थीं जिन्होंने सशस्त्र संघर्ष में प्राण न्योछावर किए।

6.2 कल्पना दत्त

सूर्य सेन के नेतृत्व में चटगाँव शस्त्रागार कांड (1930) में कल्पना दत्त ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने भूमिगत रहकर क्रांतिकारी गतिविधियाँ जारी रखीं। बाद में गिरफ्तार होने पर उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

6.3 दुर्गावती देवी

दुर्गावती देवी, जिन्हें 'दुर्गा भाभी' के नाम से जाना जाता है, भगत सिंह की क्रांतिकारी गतिविधियों की प्रमुख सहयोगी थीं। उन्होंने भगत सिंह और राजगुरु को सांडर्स हत्याकांड के बाद सुरक्षित निकालने में सहायता की। उनकी निडरता और साहस ने क्रांतिकारी आंदोलन को नई शक्ति दी।

6.4 भारत छोड़ो आंदोलन में भूमिगत गतिविधियाँ

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में जब अधिकांश नेता गिरफ्तार हो गए, तब महिलाओं ने भूमिगत आंदोलन को संचालित किया। अरुणा आसफ अली, उषा मेहता (रेडियो के माध्यम से), और अनेक अज्ञात महिला कार्यकर्ताओं ने संदेश पहुँचाने, आंदोलनकारियों को आश्रय देने, और जन-जागरण करने का कार्य किया।

7. सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय चेतना

महिला संगठनों का कार्य केवल राजनीतिक आंदोलन तक सीमित नहीं था। उन्होंने सामाजिक सुधार के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को मजबूत किया। बाल विवाह, पर्दा प्रथा, और अशिक्षा के विरुद्ध संघर्ष करते हुए उन्होंने एक नए भारत की नींव रखी।

7.1 महिला शिक्षा आंदोलन

© 2024 Prof. (Major) Dr. Anita June. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सावित्रीबाई फुले के पदचिह्नों पर चलते हुए अनेक महिला संगठनों ने शिक्षा के प्रसार को अपना प्राथमिक लक्ष्य बनाया। रात्रि पाठशालाओं, मोबाइल स्कूलों, और सामुदायिक केंद्रों के माध्यम से वंचित वर्ग की महिलाओं को शिक्षित किया गया। शिक्षित महिला ही राष्ट्रीय चेतना की वाहक बन सकती थी — यह विचार इन संगठनों की आधारशिला था।

7.2 स्वदेशी और आर्थिक प्रतिरोध

खादी और हथकरघे को बढ़ावा देकर महिला संगठनों ने ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का प्रतिरोध किया। गृहणियों ने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया, चरखा कातना सीखा, और खादी को एक राजनीतिक प्रतीक बनाया। इस आर्थिक प्रतिरोध का महत्त्वपूर्ण योगदान स्वतंत्रता संग्राम को आर्थिक आधार प्रदान करने में रहा।

7.3 सांप्रदायिकम्प्रदायिक सद्भावना

महिला संगठनों ने साम्प्रदायिक एकता को बनाए रखने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदू-मुस्लिम-सिख-ईसाई सभी समुदायों की महिलाएँ इन संगठनों में मिलकर काम करती थीं। यह एकता स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा थी।

8. चुनौतियाँ और बाधाएँ

महिला संगठनों और आंदोलनकारी महिलाओं के सामने अनेक चुनौतियाँ थीं। इन चुनौतियों को समझे बिना उनके योगदान का पूर्ण आकलन संभव नहीं है।

8.1 सामाजिक बाधाएँ

पर्दा प्रथा, सामाजिक वर्जनाएँ, और पारिवारिक दबाव महिलाओं की सार्वजनिक भागीदारी में बाधक थे। उच्च और मध्यम वर्ग की महिलाओं के लिए घर से बाहर निकलना ही एक बड़ी चुनौती था। अनेक महिलाओं को अपने परिवार के विरोध का सामना करना पड़ा।

8.2 ब्रिटिश दमन

ब्रिटिश सरकार ने महिला आंदोलनकारियों के साथ कोई नरमी नहीं बरती। उन्हें गिरफ्तार किया गया, यातनाएँ दी गईं, और उनके परिवारों पर दबाव डाला गया। जेल में भी उन्हें कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा।

8.3 वर्गीय और जातीय विभाजन

महिला आंदोलन में एक बड़ी चुनौती वर्गीय और जातीय विभाजन को पार करना था। शहरी, शिक्षित, उच्च जाति की महिलाओं का वर्चस्व था। ग्रामीण, दलित, और आदिवासी महिलाओं को मुख्यधारा के आंदोलन में शामिल करना एक चुनौती था। फिर भी अनेक संगठनों ने इस अंतर को पाटने का प्रयास किया।

8.4 राजनीतिक अधिकारों का अभाव

स्वतंत्रता पूर्व भारत में महिलाओं को मताधिकार सीमित रूप में प्राप्त था। राजनीतिक नेतृत्व में उनकी भागीदारी को हमेशा पूर्ण मान्यता नहीं मिलती थी। इसके बावजूद महिला नेत्रियों ने अपनी योग्यता और समर्पण से अपना स्थान बनाया।

9. उपसंहार

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिला संगठनों की भूमिका बहुआयामी और निर्णायक थी। इन संगठनों ने न केवल राजनीतिक आंदोलन को गति दी, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी मार्ग प्रशस्त किया। सरोजिनी नायडू से लेकर प्रीतिलता वाद्देदार तक, कस्तूरबा गांधी से लेकर अरुणा आसफ अली तक — इन महिलाओं ने अपने बलिदान और संघर्ष से इतिहास रच दिया।

आज जब हम स्वतंत्र भारत में साँस लेते हैं, तो हमें इन महान महिलाओं का स्मरण करना चाहिए। उनका योगदान इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में जितना मिलता है, वास्तव में वह उससे कहीं अधिक व्यापक और गहरा है। ये महिलाएँ अपने युग की नायिकाएँ थीं जिन्होंने सामाजिक बंधनों को तोड़कर, परिवार की परवाह किए बिना, और अपने प्राणों की बाजी लगाकर देश की आज़ादी के लिए संघर्ष किया। महिला संगठनों ने स्वतंत्रता आंदोलन को एक जन आंदोलन का स्वरूप देने में अपरिहार्य भूमिका निभाई। उन्होंने सिद्ध किया कि राष्ट्र निर्माण में नारी की भूमिका किसी भी प्रकार से पुरुष से कम नहीं है। स्वतंत्र भारत की संकल्पना उनके सपनों और बलिदानों का परिणाम है। इन संगठनों की विरासत आज भी भारतीय नारी आंदोलन और लोकतांत्रिक राजनीति को प्रेरणा देती है।

संदर्भ सूची

1. Agnew V. Elite women in Indian politics. New Delhi: Vikas Publishing House; 1979.
2. Desai N. Woman in modern India. Bombay: Vora & Co.; 1957.
3. Forbes G. Women in modern India. Cambridge: Cambridge University Press; 1996.
4. Gandhi MK. Women and social injustice. Ahmedabad: Navajivan Publishing House; 1927.
5. Mazumdar V. The social reform movement in India. New Delhi: Allied Publishers; 1976.
6. Naidu S. The broken wing: songs of love, death & destiny. London: William Heinemann, 1918.
7. Nanda BR. Indian women: from purdah to modernity. New Delhi: Radiant Publishers; 1985.
8. Nehru J. The discovery of India. Calcutta: Signet Press; 1942.
9. Ramusack BN. Women in modern India. New Delhi: Sage Publications; 1981.
10. Thapar-Björkert S. Women in the Indian national movement: unseen faces and unheard voices. New Delhi: Sage Publications; 2006.
11. Visram R. Women in India and Pakistan. Cambridge: Cambridge University Press; 1992.
12. National Archives of India. Women's movement documents. New Delhi.
13. Nehru Memorial Museum and Library. Freedom fighters' memoirs. New Delhi.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

© 2024 Prof. (Major) Dr. Anita June. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/